Padma Vibhushan



Jagadguru Swami Rambhadracharya

Jagadguru Swami Rambhadracharya, the Lifelong Chancellor of Jagadguru Rambhadracharya Handicapped University Chitrakoot, Uttar Pradesh has been a brilliant writer, author, extempore orator, composer and authority on Sanskrit Panini Grammar. Himself a Visually Challenged person, he came forward with missionary zeal and opened the gate of opportunities for the disabled youth.

2. Born on January 14, 1950, he received his Master Degree in Sanskrit from Sampurnanand Sanskrit University, Varanasi, UP. He was awarded PhD for his illustrious work on Panini, a great grammarian of Sanskrit Language and also D.Lit

3. Swami Rambhadracharya founded a 10+2 School Shri Tulsi Pragyachachhu Uchchatar Madhyamic Vidyalaya for Visually Impaired Students and another school for Hearing Impaired students. He set up a University Jagadguru Rambhadracharya Handicapped University in 2001 at Chitrakoot, (UP) for providing higher education to the differently abled youth. In the short span of about 14 years, the University has transformed the lives of about 1500 disabled persons and enabled them ho share the responsibility of Nation building. Simultaneously, the outreach programmes of the University have benefitted the rural population, especially the persons with disabilities. These programmes include awarenesss, early intervention, health care and lastly their rehabilitation. The University Provides free education in general courses (BA,MA), and professional/ vocational course at a very nominal fee. Free boarding & lodging facilities are available for all the students to facilitate them for better accessibility in higher education.

4. Swami Rambhadracharya is the recipient of numerous awards and honors such as Yash Bharti Samman (Govt. of Uttar Pradesh)-2015, Vishwa Bharti Samman (UP Sanskrit Sansthan, Lucknow)-2012, Lokmat Samman -2013, Purvanchal Ratna- 2013, Tulsi Award-2011, Vachaspati Puraskar 2008, Srivani Alankaran - 2006, Sahitya Academy Award on Mahakavya, Bhargavaraghveeyam-2005, President Award-2004, Ativishisht Puraskar-UP, Sanskrit Sansthan, 2003, Rajshekhar Samman M P Sanskrit Academy-2003, Kavikul Ratna, Sampurnanand Sanskrit University, Varanasi-2002, Mahamahopadhyay -Lal Bahadur Shastri Sanskrit Vidyapeeth, New Delhi-2011 Dharmchkrawarti Dharma Sansad, Chikago (For Progress in Religion & Culture)-1998.

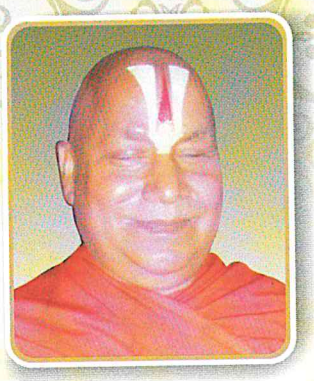

जगद्गुरू स्वामी रामभद्राचार्य

जगद्गुरू स्वामी रामभद्राचार्य, जगद्गुरू स्वामी रामभद्राचार्य विकलांग विश्वविद्यालय, चित्रकूट, उत्तर प्रदेश के आजीवन कुलपति हैं। आप एक अत्यन्त प्रतिभाशाली रचनाकार, लेखक,आशुवक्ता, संस्कृत पाणिनि व्याकरण के रचयिता और उसके विशेषज्ञ हैं। स्वयं दृष्टि विकलांग होते हुए, मिशनरी उत्साह से ओत-प्रोत होकर आप विकलांग युवाओं के सर्वांगीण कल्याण के सार्थक उपाय करने के लिए आगे आए और आपने उनके लिए प्रगति के अवसरों का द्वार खोल दिया।

2. आपका जन्म, जनवरी 14, 1950 को हुआ। आपने सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय, वाराणसी, उत्तर प्रदेश से संस्कृत में स्नात्कोत्तर उपाधि (मास्टर डिग्री) हासिल की। आपको संस्कृत भाषा के महान व्याकरणाचार्य पाणिनि के बारे में लब्धप्रतिष्ठ शोधकार्य के फलस्वरूप पी. एच. डी. और डी.लिट की भी उपाधि से विभूषित किया गया।

3. आपने दृष्टि-विकलांग विद्यार्थियों के लिए एक 10+2 श्री तुलसी प्राज्ञचक्षु उच्चतर माध्यमिक विद्यालय और श्रवण-विकलांग विद्यार्थियों के लिए एक अन्य विद्यालय संस्थापित किया। आपने विभिन्न प्रकार से विकलांग युवाओं को उच्चतर शिक्षा सुलभ करवाने के प्रयोजन से चित्रकूट, उत्तर प्रदेश में सन् 2001 में जगद्गुरू रामभद्राचार्य विकलांग विश्वविद्यालय नाम का एक विश्वविद्यालय स्थापित किया। 14 वर्ष की अल्प अवधि में इस विश्वविद्यालय ने लगभग 1500 विकलांग व्यक्तियों के जीवन का रूपान्तरण कर दिया और उन्हें राष्ट्र के निर्माण के उत्तरदायित्व को साझा करने में समर्थ बनाया। इसी के साथ-साथ, इस विश्वविद्यालय के विभिन्न कल्याणकारी कार्यक्रमों ने ग्रामीण व्यक्तियों, विशेष रूप से विभिन्न विकलांगताओं से ग्रस्त ग्रामीण व्यक्तियों को लाभान्वित किया। इन कार्यक्रमों में विभिन्न विकलांगताओं से ग्रस्त व्यक्तियों में जागरूकता का संचार किए जाने से संबंधित कार्यक्रम, उनके संबंध में आरम्भिक मध्यस्थता से जुड़े कार्यक्रम, उनके स्वास्थ्य की देखभाल से जुड़े कार्यक्रम और अन्ततः उनके पुनर्वास से संबंधित कार्यक्रम शामिल हैं। यह विश्वविद्यालय सामान्य पाठ्यक्रमों (बी.ए.,एम.ए.) में निःशुल्क शिक्षा और व्यावसायिक पाठ्यक्रमों में बहुत मामूली शुल्क के भुगतान पर शिक्षा प्रदान करता है। सभी विद्यार्थियों की उच्चतर शिक्षा तक बेहतर पहुंच को सुसाध्य बनाने के प्रयोजन से उन्हें मुफ्त आवास और भोजन की सुविधा सुलभ करवाई जाती है।

4. आपको वर्ष, 2015 में उत्तर प्रदेश शासन द्वारा यश भारती सम्मान, वर्ष, 2012 में उत्तर प्रदेश संस्कृत संस्थान, लखनऊ द्वारा विश्व भारती सम्मान, वर्ष, 2013 में लोकमत सम्मान, वर्ष 2013 में पूर्वांचल रत्न, वर्ष, 2011 में तुलसी पुरस्कार, वर्ष, 2008 में वाचस्पति पुरस्कार, वर्ष, 2006 में श्री वाणी अलंकरण, वर्ष, 2005 में भार्गवाराघवीयम महाकाव्य पर साहित्य अकादमी पुरस्कार,वर्ष, 2004 में राष्ट्रपति पुरस्कार, वर्ष, 2003 में उत्तर प्रदेश संस्कृत संस्थान द्वारा अतिविशिष्ट पुरस्कार, वर्ष, 2003 में मध्य प्रदेश संस्कृत अकादमी द्वारा राजशेखर सम्मान, वर्ष, 2002 में सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय, वाराणसी द्वारा कविकुल रत्न, वर्ष, 2011 में लालबहादुर शास्त्री संस्कृत विद्यापीठ, नई दिल्ली द्वारा महामहोपाध्याय, धर्म और संस्कृति को आगे बढ़ाने और प्रोत्साहित करने के फलस्वरूप वर्ष, 1998 में धर्म संसद, शिकागो द्वारा धर्म चक्रवर्ती जैसे अनेक पुरस्कारों और सम्मानों से विभूषित किया गया है।